9. ममता की मूर्ति

बहुत साल पहले की बात है। एक बार अमरीकी अधिकारी कैनेडी ने भारत में स्थित सेवा शिविरों का दौरा किया। एक शिविर में उन्होंने देखा कि एक रोगी उल्टी, दस्त और खून से लथपथ पड़ा था। एक महिला पूरे मन से रोगी की सेवा और सफाई में लगी थी। यह दृश्य देख कैनेडी की आँखें खुली की खुली रह गईं। उन्होंने महिला की तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा, "क्या मैं आपसे हाथ मिला सकता हूँ।" महिला अपने हाथों को देखकर बोलीं, "ओह ! अभी नहीं, अभी ये हाथ साफ नहीं हैं। "कैनेडी बोले," नहीं–नहीं इन्हें गंदे कहकर इनका अपमान मत कीजिए। ये बहुत पवित्र हैं। इन्हें तो मैं अपने सिर पर रखना चाहता हूँ।" यह कहते हुए कैनेडी ने उनके हाथों को अपने सिर पर रख लिया।

ये पवित्र हाथ मदर टेरेसा के थे, जो सचमुच गरीब, असहाय, रोगी, अपाहिज आदि लोगों की माँ थीं। इनका जन्म 27 अगस्त 1910 ई० को युगोस्लाविया के स्पोजे नगर में हुआ था। उनके बचपन का नाम एग्नेस गोंझा बोजाक्यू था। माँ का नाम ड्रानाफिल तथा पिता का नाम निकोलस था।

बचपन से ही उनके मन में सेवा का भाव था। इसी कारण उन्होंने 'नन' बनने का निश्चय किया। 1928 ई० में वे दार्जिलिंग के लोरैटो कान्वेंट में शिक्षिका बनकर भारत आईं। 1929 ई० में उन्होंने कोलकाता के सेंट मेरी हाईस्कूल में पढ़ाना शुरू किया। बाद में वे इसी विद्यालय की प्रधान शिक्षिका बन गईं।

गरीबों, असहायों, रोगियों को देखकर, इनका दिल सेवा के लिए मचलता रहता था। आखिरकार 1948 ई० में उन्हें विद्यालय छोड़ने की अनुमति मिल गई। अब उन्होंने अपना जीवन दुखियों, गरीबों, कुष्ठ रोगियों आदि की सेवा में लगा दिया। अब पूरी दुनिया में उनकी पहचान 'मदर टेरेसा' के रूप में हुई। उन्होंने नीली किनारी वाली सफेद साड़ी पहनना शुरू कर दिया। बाद में यह पहनावा सेवा भाव रखने वाली नर्सों की पहचान बन गया।

नर्स की ट्रेनिंग लेने के बाद उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र एक बार फिर कोलकाता

बनाया। एक बार की बात है मदर टेरेसा एक ऐसी बुढ़िया को अस्पताल ले गईं जिसका शरीर चूहों और चींटों ने कुतर डाला था । वह अंतिम साँसें ले रही थीं । डॉक्टरों ने उसका इलाज करने से मना कर दिया । मदर उसे अपनी बाँहों में उठाकर दूसरे अस्पताल की ओर दौड़ीं, लेकिन उस बुढ़िया ने उनकी बाँहों में ही दम तोड़ दिया।

इसके बाद मदर ने प्रण किया कि अब ऐसे मरणासन्न अनाथों के लिए कहीं घर की व्यवस्था करनी होगी। इसीलिए कोलकाता में ही उन्होंने "निर्मल हृदय" नामक घर की स्थापना की । यह घर क्या था, एक जीर्ण-शीर्ण कमरा था, जिसमें दो पलंग रखे गए थे । जब कभी भी उन्हें कोई असहाय, लावारिस और बीमार व्यक्ति दिखता था, वे उसे 'निर्मल हृदय' संस्थान में ले आतीं । यहाँ स्नेह, सहानुभूति एवं प्यार के साथ उसकी सेवा और उपचार करतीं। कार्य एवं सेवा के विस्तार के साथ उन्हें खूब प्रसिद्धि प्राप्त हुई। वर्ष 1950 ई० में उनकी संस्था को 'मिशनरीज़ ऑफ चैरिटीज़' की मान्यता मिल गई ।

मदर टेरेसा ने शिशु सदन, प्रेम घर और शांति नगर की भी स्थापना की ।

मदर टेरेसा अपने कार्यों को खुद करती थीं । रोगियों का मल-मूत्र या घावों की सफाई भी वे खुद करती थीं । ये काम उन्हें काफ़ी आनंद देता था । इनके कार्यों से प्रभावित होकर भारत सरकार ने उन्हें **भारत रत्न** से सम्मानित किया । **नोबेल पुरस्कार** जो दुनिया का प्रसिद्ध पुरस्कार है, वह भी उन्हें प्राप्त हुआ ।

सेवा, शांति, भाईचारा, परोपकार आदि की रौशनी मदर टेरेसा 5 सितंबर 1997

को हमें छोड़कर स्वर्गवासी हो गईं। आज 'माँ' हमारे बीच नहीं हैं। मगर उनकी यह उक्ति हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है कि आपको विश्व में जहाँ कहीं भी दुखी, रोगी, बेसहारा, असहाय आदि लोग मिलें वे आपका प्यार पाने के हकदार हैं। उन्हें आपकी मदद चाहिए ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

शब्दार्थ

असहाय	–	जिसका कोई सहायता करने वाला नहीं है
जीर्ण-शीर्ण	–	टूटा-फूटा
प्रण करना	–	प्रतिज्ञा करना
नन	–	सेवा भाव रखनेवाली अविवाहित स्त्री

अभ्यास

आपकी कलम से

1. मदर टेरेसा के बारे में बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
2. अनेक ऐसी महिलाएँ हैं जिन्होंने अपने कार्यों से काफी प्रसिद्धि पाई हैं। आप ऐसी किसी एक महिला के बारे में कक्षा में बताएँ। यह महिला आपकी माँ, दादी, नानी, मौसी भी हो सकती हैं।
3. मदर टेरेसा के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक घटनाओं के बारे में पता कीजिए और लिखिए।

सही या गलत

पाठ के आधार पर (✓) या (X) निशान लगाइए–

- मदर टेरेसा का बचपन का नाम मरिया था। ☐
- वे सेवा-भाव के कारण नन बनना चाहती थीं। ☐
- उन्होंने नर्स की ट्रेनिंग ली थी। ☐
- उनका कार्यक्षेत्र कोलकाता था। ☐

- वे कहती थीं – दुखी, रोगी आदि आपकी दया के हकदार हैं। ☐
- 'शिशु-सदन' और 'प्रेमघर' उनकी संस्थाएँ थीं। ☐

2. **सही शब्दों से वाक्यों को पूरा कीजिए–**

(क) मेरी ----------- बहुत अच्छा पढ़ाती हैं। (शिक्षक/ शिक्षिका)

(ख) ----------- पौधे लगा रहा था। (माली/मालिन)

(ग) मदर को एक ----------- महिला मिली। (बूढ़ा/वृद्धी)

(घ) मदर टेरेसा ने खूब प्रसिद्धि ----------- । (पाया/ पाई)

(ङ) सभा में अनेक ----------- बैठी थीं। (विद्वान/विदुषियाँ)

पाठ से बताइए

(क) मदर टेरेसा का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) मदर टेरेसा के अनुसार जीवन का मूल मंत्र क्या है?

(ग) किस दृश्य ने मदर टेरेसा का मन मोड़ दिया?

(घ) पीड़ितों के लिए मदर टेरेसा ने किन-किन संस्थाओं की स्थापना कीं?

आपकी समझ से

(क) यदि आपको कहीं घायल व्यक्ति मिले तो आप क्या करेंगे?

(ख) किसी भूखे व्यक्ति को खाना खिलाकर आपको किस प्रकार की अनुभूति होगी?

भाषा की बात

1. **''वहाँ अपार जन-समूह एकत्रित था।''** इस वाक्य को वर्तमान काल में इस रूप में लिखा जा सकता है–

''वहाँ अपार जन-समूह एकत्रित है।'' निम्नलिखित वाक्यों को वर्तमान काल में लिखें।

(क) उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं था।

(ख) वह महिला कौन थी?

(ग) एक स्त्री सड़क पर लेटी हुई थी।

(घ) वह दर्द से कराह रही थी।

----

2 . निम्नलिखित वाक्यों में 'का', 'के', 'की' भरिए –

(क) यह मेरे जीवन भर ---------------- कमाई है।

(ख) बचपन से ही उनके मन में सेवा ---------------- भाव था।

(ग) प्रशिक्षण ---------------- बाद उन्हें कोलकाता भेजा गया।

(घ) उन्होंने वृद्ध व्यक्तियों ---------------- ध्यान रखा।

(ङ) उन्होंने एक नई संस्था ---------------- स्थापना की।

3 . 'उनका वास्तविक नाम एग्नेस गोंज़ा बोजाक्यू था।' यहाँ 'वास्तविक' शब्द 'वास्तव' में 'इक' लगाकर बनाया गया है। इस प्रकार 'इक' लगे हुए कुछ शब्द लिखिए –

देह + इक = ----------

देव + इक = ----------

शरीर + इक – ----------

नगर । इक = ----------

कुछ करने को

1. एक दिन उन्होंने ऐसा भयानक दृश्य देखा जिसने उनके जीवन की दिशा को नया मोड़ दे दिया। क्या आपको कभी ऐसा दृश्य देखने को मिला है जिसने आपको सोचने के लिए विवश किया हो? बताइए।
2. 'मदर टेरेसा' के अतिरिक्त किसी अन्य समाज सेवक/सेविका के बारे में अपने अध्यापक / अध्यापिका से जानिए।
3. 'मानव-सेवा सबसे बड़ा धर्म है।'' इस विषय पर अपने विचार बताइए।

कुछ करने के लिए

नीचे दिए गए अक्षर जाल में से विशेषण शब्द चुनकर लिखिए-

र	मी	ठा	चा	ला	क
सी	वी	र	ठं	डा	ई
ला	ल	रं	गी	न	मा
ग	र्म	नु	ला	स	न
न	म	की	न	फे	दा
घ	ना	ला	सुं	द	र

....